बीस

स्तुति और आराधना

Praise and Worship

> स्त्री ने उस से (यीशु से) कहा, ''हे प्रभु, मुझे ज्ञात होता है कि तू भविष्यद्वक्ता है। हमारे बापदादों ने इसी पहाड़ पर भजन किया: और तुम कहते हो कि वह जगह जहां भजन करना चाहिए यरूशलेम में है।'' यीशु ने उस से कहा, ''हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोंगे न यरूशलेम में... परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है, जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें'' (यूह. 4:19-24)।

यीशु के होठों से कहे गए ये शब्द आराधना के हमारी सबसे महत्वपूर्ण पहलू की समझ की नीव को डालते हैं। वह ''सच्चे आराधकों'' के बारे में बोला और उनकी योग्यताओं का वर्णन भी उसने किया। यह इस बात का संकेत है कि वहां आराधक तो थे लेकिन *सच्चे* आराधक नहीं थे। उन्हें लगता है कि वे परमेश्वर की आराधना कर रहे हैं परन्तु वास्तव में वैसा नहीं करते हैं, क्योंकि वे उसकी मांगों को पूरा नहीं कर रहे होते हैं।

यीशु ने सच्चे आराधकों की विशेषताओं के बारे में बताया- वे ''आत्मा और सच्चाई में'' होकर आराधना करते हैं। अत: यह कहा जा सकता है कि ''देह और कुटिलता'' में आराधना करने वाले झूठे आराधक हैं। शारीरिक व झूठे आराधक संभवत: आराधना की विधि को करना जानते हो, परन्तु यह सब केवल एक दिखावा है, क्योंकि यह उस हृदय से नहीं निकलती जिसमें परमेश्वर का प्रेम होता है।

परमेश्वर की सच्ची आराधना केवल उसी हृदय से आ सकती है जो परमेश्वर से प्रेम करता है। अत: आराधना केवल ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसे हम कलीसिया में एकत्रित होकर करते हैं, बल्कि यह एक ऐसी चीज़ है जिसे हम मसीह की आज्ञाओं का पालन करने पर अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में करते हैं। अद्‌भुत है कि यीशु जिस स्त्री से बात कर रहा था वह पांच बार विवाह कर चुकी थी और अब भी एक पुरुष के साथ रह रही थी और परमेश्वर की आराधना करने के स्थान के बारे में विवाद करना चाहती थी। वह उन कई धर्म के लोगों को प्रस्तुत करती है जो दैनिक जीवन व्यतीत करते हुए परमेश्वर से विद्रोह करते हैं। वे सच्चे आराधक नहीं हैं।

एक बार यीशु ने फरीसियों और शास्त्रियों को उनकी झूठी और हृदय विहीन आराधना के लिए झिड़का था:

> हे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे बारे में यह भविष्यद्वाणी ठीक की कि, *''ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है।* और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं'' (मत्ती 15:7-9, पर बल दिया गया है)।

यद्यपि यीशु के दिनों में यहूदियों और सामरियों ने लोगों द्वारा आराधना किये जानेवाले स्थान पर बड़ा बल दिया था, यीशु ने कहा कि स्थान का कोई महत्व नहीं है। इसके विपरीत, यह प्रत्येक व्यक्ति के हृदय की दशा और परमेश्वर के प्रति उसका रवैया है जो उसकी आराधना की गुणवत्ता को निर्धारित करता है।

आज कलीसिया में कही जाने वाली ''आराधना'' उन मृत रीतियों से अधिक नहीं है जो मृत आराधकों द्वारा की जाती है। लोग ''आराधना गीतों'' को गाते समय दूसरे के द्वारा गाए जाने वाले शब्दों को केवल तोते के समान दोहराते हैं और उनकी आराधना व्यर्थ ही होती है, क्योंकि उनकी जीवन प्रणाली उसे प्रगट कर देती है जो वास्तव में उनके मनों में होता है।

इसके विपरीत परमेश्वर अपनी आज्ञाकारी सन्तान के मन से निकले हुए इन शब्दों को सुनना पसन्द करता है– ''मैं तुझसे प्रेम करता हूं'' बजाय इसके कि रविवार प्रात: मसीहियों द्वारा हृदय रहित होकर गाए जाने वाले हज़ारों गीत जैसे ''तू कितना महान है।''

आत्मा में आराधना करना
Worshipping in Spirit

कुछ का कहना है कि ''आत्मा में'' प्रार्थना करने का अर्थ अन्य भाषा में प्रार्थना करना और गाना है, लेकिन यह यीशु के शब्दों की रोशनी में खींचातानी करना लगता

है। उसने कहा, ''वह समय आ रहा है, *और अब भी है,* जब सच्चे आराधक आत्मा और सच्चाई में पिता की आराधना करेंगे'' यह इस ओर संकेत करता है कि वहां *पहले से* ही ऐसे लोग थे जो ''आत्मा में'' आराधना करने की मांग को पूरा करते थे। निस्संदेह, पिन्तेकुस्त के दिन कोई भी अन्य भाषा में नहीं बोला था। इसी कारण कोई भी विश्वासी, चाहे वह अन्य भाषा में बोल सकता हो या नहीं, आत्मा में और सच्चाई में आराधना कर सकता है। अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना और गाना निश्चय ही एक विश्वासी की आराधना में सहायक हो सकता है, लेकिन अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना एक हृदय रहित विधि हो सकती है।

आरम्भिक कलीसिया की आराधना में एक रोचक अन्तर्दृष्टि प्रेरित. 13:1-2 में पाई जाती है।

> अन्ताकिया की कलीसिया में कितने भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; अर्थात् बरनवास और शमौन जो नीगर कहलाता है; और लूकियुस कुरेनी, और देश की चौथाई के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम और शाऊल। जब वे उपवास सहित *प्रभु की आराधना कर रहे थे,* तो पवित्र आत्मा ने कहा; ''मेरे निमित्त बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिस के लिये मैंने उन्हें बुलाया है'' (पर बल दिया गया है)।

ध्यान दें कि इस परिच्छेद में कहा गया वे ''प्रभु की आराधना कर रहे थे।'' यह विचार करना उचित लगता है कि सच्चे आराधक वास्तव में परमेश्वर की सेवा करते हैं। तथापि, यह उस समय सत्य होता है जब प्रभु हमारे प्रेम का प्रमुख केन्द्र होता है।

आराधना करने के तरीके
Ways to Worship

भजन संहिता की पुस्तक, जिसे इस्राएल की गीत-पुस्तक भी कहा जा सकता है, कई तरह से हमें परमेश्वर की आराधना करने को प्रेरित करती है। उदाहरण के लिए भजन संहिता 32 में हम पढ़ते हैं :

> हे सब सीधे मनवालों आनन्द से *जयजयकार* करो (भजन. 32:11ब, पर बल दिया गया है)।

जिस तरह से शांत, श्रद्धालु आराधना का अपना स्थान होता है उसी तरह आनन्द से जयजयकार करने का भी।

> हे धर्मियो यहोवा के कारण *जयजयकार* करो। क्योंकि धर्मी लोगों को स्तुति करनी सोहती है। वीणा बजा बजाकर यहोवा का धन्यवाद करो, दस तारवाली सारंगी बजा बजाकर उसका भजन गाओ। उसके

> लिये नया गीत गाओ, जय जयकार के साथ भली भांति बजाओ (भजन. 33:1-3, पर बल दिया गया है।)।

निस्संदेह, हमें आराधना में प्रभु के लिए गाना चाहिए, लेकिन हमारा गाना *आनन्दपूर्वक* होना चाहिए, जो एक व्यक्ति के मन की दशा का बाहरी संकेत है। हम अपने आनन्ददायक गीतों के साथ-साथ संगीत के उपकरणों का भी प्रयोग कर सकते हैं। तथापि, मैं यह बताना चाहता हूं कि अधिकांश कलीसियाई सभाओं में, बिजली से चलने वाले संगीत उपकरणों की आवाज़ इतनी तेज़ होती है कि उसमें गीतों की आवाज़ दब कर रह जाती है। उन्हें या तो धीमा कर देना चाहिए या फिर बन्द कर देना चाहिए। भजनकर्त्ता को कभी ऐसी समस्या नहीं रही थी।

> इसी प्रकार मैं जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूंगा; और तेरा नाम लेकर *अपने हाथ उठाऊंगा* (भजन. 63:4, पर बल दिया गया है)।

समर्पण और श्रद्धा के चिन्ह के रूप में, हम अपने हाथों को परमेश्वर की ओर उठा सकते हैं।

> हे सारी पृथ्वी के लोगो, परमेश्वर के लिये जयजयकार करो; उसके नाम की महिमा का भजन गाओ; उसकी स्तुति करते हुए उसकी महिमा करो। परमेश्वर से *कहो,* कि *तेरे काम क्या ही भयानक हैं।* तेरी महासामर्थ के कारण तेरे शत्रु तेरी चापलूसी करेंगे। सारी पृथ्वी के लोग तुझे दण्डवत् करेंगे, और तेरा भजन गाएंगे, वे तेरे नाम का भजन गाएंगे (भजन. 66:1-4, पर बल दिया गया है।

हमें परमेश्वर को बताना चाहिये कि वह कितना अद्‌भुत है और उसके बहुत से अद्‌भुत गुणों के लिए हमें उसकी स्तुति भी करनी है। परमेश्वर की स्तुति करने को भजन संहिता उपयुक्त शब्दों का एक स्थान है। हमें बार-बार इस तरह से दोहराने से ''प्रभु, मैं तेरी स्तुति करता हूं'' से अलग कुछ करने की ज़रूरत है।

> आओ हम *झुककर* दण्डवत् करें, और अपने कर्त्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें (भजन. 95:6अ पर बल दिया गया है)।

हमारी मुद्रा भी हमारी आराधना की अभिव्यक्ति हो सकती है, चाहे वह झुकना, घुटने टेकना या खड़े होना हो।

> भक्त लोग महिमा के कारण प्रफुल्लित हों; और *अपने बिछौनों पर* भी पड़े-पड़े जयजयकार करें (भजन. 149:5, पर बल दिया गया है)।

लेकिन हमें आराधना करने के लिए खड़े होना या घुटने टेकना ही नहीं है- हम बिस्तर (बिछौने) पर पड़े हुए भी ऐसा कर सकते हैं।

> उसके फाटकों से *धन्यवाद,* और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उस का *धन्यवाद* करो, और उसके नाम को धन्य कहो (भजन. 100:4, पर बल दिया गया है)।

धन्यवाद देना निश्चय ही हमारी आराधना का एक भाग होगा।

> वे *नाचते* हुए उसके नाम की स्तुति करें (भजन. 149:3, पर बल दिया गया है)।

हम नाचते हुए भी परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं। लेकिन यह नाचना शारीरिक, कामुक या मनोरंजक नहीं होना चाहिए।

> नरसिंगा फूंकते हुए उसकी स्तुति करो; सारंगी और वीणा बजाते हुए उसकी स्तुति करो! डफ बजाते और नाचते हुए उसकी स्तुति करो; तारवाले बाजे और बांसुली बजाते हुए उसकी स्तुति करो! ऊंचे शब्द वाली झांझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो; आनन्द के महाशब्द वाली झांझ बजाते हुए उसकी स्तुति करो! जितने प्राणी हैं सब के सब याह की स्तुति करो! याह की स्तुति करो! (भजन. 150:3-6)।

उनके लिये परमेश्वर को धन्यवाद दें जिन्हें संगीत का दान मिला है। यदि वे वाद्य यन्त्रों को एक प्रेमी हृदय से बजाते हैं, उनके वरदानों का प्रयोग परमेश्वर को महिमा देने के लिए किया जा सकता है।

आत्मिक गीत

Spiritual Songs

> *यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ,* क्योंकि उसने आश्चर्यकर्म किये हैं! (भजन. 98:1अ, पर बल दिया गया है)।

पुराने गीत को गाने में तब तक कोई बुराई नहीं है जब तक कि वह परम्परा न बन जाए। इसके बाद हमें एक नये गीत की ज़रूरत होती है जो हमारे हृदयों से आता है। नये नियम में, हम सीखते हैं कि पवित्र आत्मा नये गीतों की रचना करने में हमारी सहायता करेगा :

> मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ (कुलु. 3:16)।
>
> और दाखरस से मतवाले न बनो क्योंकि इससे लुचपन होता है,

> पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ। और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो। और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो (इफि. 5:18-20)।

पौलुस ने लिखा कि हमें आपस में एक दूसरे के साथ ''भजन, स्तुति गीत और आत्मिक गीत'' गाने चाहिए। अत: इन तीनों के बीच अन्तर होना चाहिए। यूनानी के मूल शब्दों का अध्ययन इस बारे में कुछ सहायता देता है, लेकिन शायद ''भजन'' से अभिप्राय बाइबल के भजनों को कुछ संगीत उपकरणों के साथ गाने से है। ''स्तुति गीत'' दूसरी ओर, धन्यवाद के सामान्य गीत हो सकते हैं जिन्हें कलीसियाओं में कई विश्वासियों द्वारा बनाया गया हो। ''आत्मिक गीत'' संभवत: पवित्र आत्मा द्वारा दिये गए स्वैच्छिक गीत हैं जो कि भविष्यवाणी के वरदान के समान हैं, बस सिवाय इसके को छोड़ कर गाया जाता है।

स्तुति और आराधना हमारे प्रतिदिन के जीवन का एक भाग होना चाहिए-न केवल ऐसी चीज़ जिसे कलीसियाई आत्माओं में ही किया जाए। पूरे दिन भर में हम परमेश्वर की आराधना करने के साथ-साथ उसके साथ निकट सहभागिता का अनुभव कर सकते हैं।

स्तुति-विश्वास कार्यरूप में
Praise-Faith in Action

स्तुति और आराधना परमेश्वर में हमारे विश्वास की सामान्य अभिव्यक्तियां हैं। यदि हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर सच में विश्वास करें, तो हम आनन्द मनाने वाले लोग होंगे जो कि परमेश्वर के लिए स्तुति से भरे रहते हैं। यहोशू और इस्राएल के लोगों को सर्वप्रथम चिल्लाना था, तभी दीवार गिरती। बाइबल हमें ''प्रभु में सदा आनन्दित रहने'' की शिक्षा देती है (फिलि. 4:4) और यह कि हम ''प्रत्येक चीज़ में धन्यवाद दें, (1 थिस्स. 5:18 अ)।

स्तुति की सामर्थ के सबसे अद्वितीय उदाहरण 2 इतिहास 20 में पाए जाते हैं जब यहूदा देश पर मोआब और अम्मोन की सेना द्वारा हमला किया गया था। राजा यहोशापात की प्रार्थना के जबाब में, परमेश्वर ने इस्राएल को निर्देश दिया:

> तुम इस बड़ी भीड़ से मत डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो; क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं; परमेश्वर का है। कल उनका सामना करने को जाना-इस लड़ाई में तुम्हें लड़ना न होगा, हे यूहदा और हे यरूशलेम, ठहरे रहना, और खड़े रहकर यहोवा की ओर से अपना बचाव देखना (2 इति. 20:15ब-17)।

कथानक आगे कहता है :

> बिहान को वे सवेरे उठकर तको के जंगल की ओर निकल गए; और चलते समय यहोशापात ने खड़े होकर कहा, ''हे यहूदियो, हे यरूशलेम के निवासियो, मेरी सुनो, अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास रखो, तब तुम स्थिर रहोगे, उसके नबियों की प्रतीति करो, तब तुम कृतार्थ हो जाओगे।'' तब उसने प्रजा के साथ सम्मति करके कितनों को ठहराया, जो कि पवित्रता से शोभायमान होकर हथियारबन्दो के आगे-आगे चलते हुए यहोवा के गीत गाएं, और यह कहते हुए उसकी स्तुति करें, कि ''*यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।*'' *जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों, मोआबियों और सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे, घातकों को बैठा दिया और वे मारे गए।* क्योंकि अम्मोनियों और मोआबियों ने सेईर के पहाड़ी देश के निवासियों को डराने और सत्यानाश करने के लिये उन पर चढ़ाई की, और जब वे सेईर के पहाड़ी (देश) के निवासियों का अन्त कर चुके, तब उन सभों ने एक दूसरे के नाश करने में हाथ लगाया। सो जब यहूदियों ने जगंल की चौकी पर पहुंचकर उस भीड़ की ओर दृष्टि की, तब क्या देखा कि वे भूमि पर पड़ी हुई लोथ हैं; और कोई नहीं बचा। तब यहोशापात और उसकी प्रजा लूट लेने को गए और लोगों के बीच बहुत सी सम्पति और मनभावने गहने मिले; उन्होंने इतने गहने उतार लिये कि उनको न ले जा सके, बरन लूट इतनी मिली, कि बटोरते बटोरते तीन दिन बीत गए (2 इति. 25:20-25 पर बल दिया गया है)

विश्वास से भरी स्तुति सुरक्षा और प्रयोजन को लेकर आती है।

स्तुति की सामर्थ विषय पर अतिरिक्त जानकारी के लिये देखें फिलि. 4:6-7 (स्तुति शांति लाती है), 2 इति. 5:1-14 (स्तुति परमेश्वर की उपस्थिति को लाती है), प्रेरित. 13:1-2 (स्तुति परमेश्वर के उद्देश्य और योजनाओं को रोशनी में लाती है), और प्रेरित. 16:22-26 (स्तुति परमेश्वर की सुरक्षा और कैद से मुक्ति को लाती है)।